Dainik Jaghran - New Delhi-29-03-2011

पानी बचाने पर डीटीयू में दिया जोर

राष्ट्रीय कार्यशाला

- जल संकट से निबटने पर वैज्ञानिकों ने की चर्चा

बाहरी दिल्ली, जागरण संवाददाता : जल संकट के सतत और अभिनव समाधान हेतु दिल्ली प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय (डीटीयू) में एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। डीटीयू के डिपार्टमेंट आफ सिविल एंड एन्वायरमेंट इंजीनियरिंग और ग्रीन इंस्टीटयूट फार रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन विभाग के केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. एसपी गौतम ने किया।

उन्होंने बिन पानी सब सून बताते हुए पानी बचाने पर जोर दिया और सतत तकनीक के आधार पर जल के दोबारा इस्तेमाल किए जाने की बात कही। इस मौके पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के स्कूल आफ एन्वायरमेंट साइंस के प्रो.वी सुब्रहमणियम ने बताया कि पृथ्वी पर मौजूद 90 फीसदी पानी समुद्र के रूप में है। 67 फीसदी जल का इस्तेमाल मनुष्य कृषि एवं महज नौ फीसदी प्रयोग घरों एवं छह फीसदी खदानों आदि के कार्यों में होता है। उन्होंने बताया कि मानसून के मौसम में जल भंडारण के माध्यम से जल स्तर बढ़ाया जा सकता है।

कार्यशाला में बताया गया कि राजधानी में रोजाना करीब 750 मिलियन गैलन सीवेज बनता है। इसका 48 फीसदी हिस्सा ठीक कर शेष 52 फीसदी हिस्सा नालियों के जरिए यमुना में प्रवाहित किया जाता है। डीटीयू के वाइस चांसलर प्रो. पीबी शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा घरेलू जल के पुनर्चक्रण हेतु 30 हजार लीटर क्षमता वाला प्लांट लगाया जाएगा। जिसमें कॉलेजों, हास्टलों एवं अन्य भवनों से निकलने वाले पानी का पुनर्चक्रण किया जाएगा। इससे कैंपस में जल स्तर बढ़ने के साथ वाटर हार्वेस्टिंग भी होगा। कार्यशाला में एमके शमशुद्दीन, एलवी सप्तर्षि, प्रो. एसके सिंह आदि ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

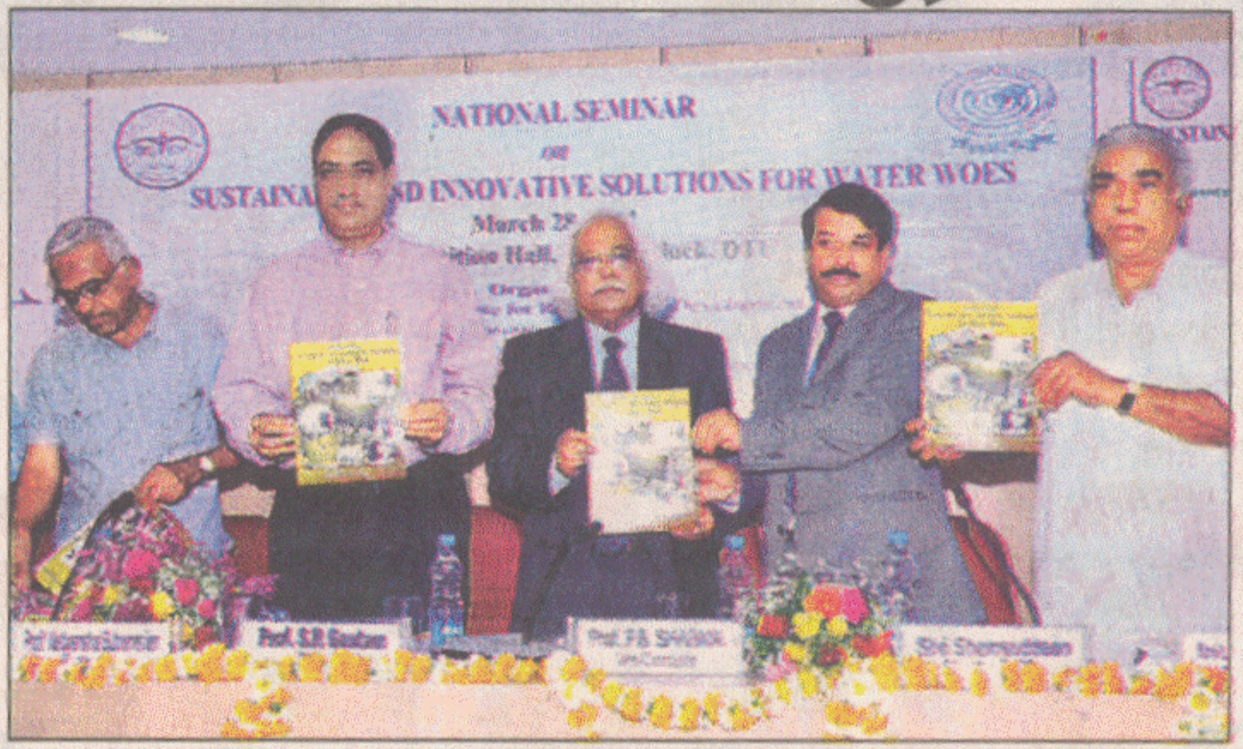

दिल्ली प्राद्यौगिकी विश्वविद्यालय में जल संकट पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में जल संकट पर संदेश जारी करते वैज्ञानिक। जागरण